

चरागाह प्रबंधन सुनीश्चित करे: भेड़ और बकरियों में परजीवी समस्याएं भगाये

संजीव कुमार¹, दिनेश कुमार¹, रश्मि कुमारी², दिलीप कुमार यादव¹ और उमेश कुमार¹

¹सहायक प्राध्यापक, राँची पशु चिकित्सा विज्ञान महाविद्यालय, बिरसा कृषि विश्वविद्यालय,
राँची- 834006

²सहायक प्राध्यापक, संजय गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ डेयरी टेक्नोलॉजी, पटना, बिहार

चराई के मौसम में परजीवी कई भेड़ या बकरी उत्पादकों को परेशान करते रहते हैं। आंतरिक परजीवी विकास दर को कम कर देते हैं और साथ ही साथ उच्च स्तर पर मृत्यु का कारण भी बन सकते हैं। पशुओं में मक्खी, किलनियाँ, तथा मच्छर जोकि बाह्य परजीवी हैं अनेक प्रकार के रक्त परजीवियों को शरीर के अंदर खून चूसने के द्वारा फैला देते हैं। कोई भी घरेलू पशु इस समस्या से बचा नहीं है। भारत में किलनी एवं किलनी द्वारा फैलने वाले रोगों से एक अनुमान के अनुसार लगभग दो हजार करोड़ रुपये प्रतिवर्ष को नुकसान होता है। ये बाह्य परजीवी खुजली करने के साथ-साथ त्वचा को खराब कर देते हैं तथा वहां पर घाव बन जाते हैं। पशुओं के बाल गिर जाते हैं, खाल फटने लगती है तथा अंत में त्वचा से खून बहने लगता है। बाह्य परजीवी अप्रत्यक्ष रूप से विभिन्न प्रकार के परजीवी दबेबेसिया, थेलेरिया, ट्रिपैनोसोमा, मलेरिया^{1/2} तथा कृमि रोग, बीमार पशुओं से स्वस्थ पशुओं में फैलाते हैं। अतः इन कीटों के बारे में पशुपालकों को जानकारी होनी चाहिए ताकि बाह्य परजीवियों से पशुओं को बचाकर बीमारियों के प्रकोप से बचाया जा सके।

हालाँकि, भेड़ या बकरी उत्पादक अपने झुंड या झुंड पर प्रभाव को कम करने के लिए कई नियम का पालन कर सकते हैं। ये नियम चराई प्रबंधन पर केन्द्रित हैं। पशुधन अपने खाद में आंतरिक परजीवी अंडे छोड़ते हैं। फिर ये अंडे फूटते हैं और कई लार्वा चरणों से गुजरते हैं, जब तक कि वे एक संक्रामक चरण तक नहीं पहुंच जाते। अंडे से संक्रामक अवस्था तक जाने में कम से कम छह दिन लग सकते हैं। इसलिए, उत्पादक इस चक्र से आगे रहने के लिए चराई चक्र का उपयोग कर सकते हैं। खेतों को अस्थायी बाड़ का उपयोग करके उप-विभाजित किया जा सकता है। ये छोटे क्षेत्र बकरियों को खेत में मौजूद चारे को अधिक समान रूप से चरने की अनुमति देते हैं। परजीवी जीवन चक्र से आगे रहने के लिए जानवरों को पांच दिनों के भीतर एक नए क्षेत्र में स्थानांतरित करें।

लार्वा लंबे समय तक जीवित रह सकता है, यहां तक कि 120 दिनों तक भी, जब मौसम ठंडा और नम हो। हालाँकि, जब मौसम गर्म और शुष्क होता है, तो वे परजीवी बहुत जल्दी मर सकते हैं। इसलिए, चुनौती तब आती है जब उत्पादक इन मौसम पैटर्न के बीच संतुलन बनाते हैं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि संक्रामक परजीवी लार्वा अब चरागाहों में मौजूद नहीं हैं। परजीवी लार्वा को मारने के लिए उन क्षेत्रों को गर्मी और धूप के लिए खोलने का एक तरीका घास के लिए खेतों की कटाई करना है। एक अन्य विकल्प लंबे समय तक आराम करना है ताकि भेड़ें चरने के लिए उस क्षेत्र में लौटने से पहले परजीवी मर जाएं।

परजीवी भेड़ या बकरियों के अंदर हाइपोबायोटिक या सुप्त अवस्था में भी जा सकते हैं। पर्यावरण की स्थिति में सुधार होने तक परजीवी इसी अवस्था में रह सकते हैं। गर्मियों के दौरान ऐसा होने पर भेड़ और बकरी उत्पादकों को अक्सर समस्याएँ देखने को मिलती हैं। लंबे समय तक गर्म और

शुष्क मौसम की स्थिति के दौरान जानवर छोटे-छोटे चरागाहों में चराई करते हैं। फिर , जब बारिश के बाद मौसम की स्थिति में सुधार होता है , तो अचानक परजीवी "प्रस्फुटित" होते हैं। जानवरों के अंदर रहने वाले परजीवी और अंडे के चरण में रहने वाले परजीवी बहुत तेजी से संक्रामक अवस्था में विकसित होते हैं। इससे बहुत बड़ी संख्या में संक्रामक परजीवी पैदा होते हैं। इसलिए , गर्मियों के दौरान चराई के बीच 65 दिन या उससे अधिक की पर्याप्त आराम अवधि महत्वपूर्ण हो सकती है।

बहु-प्रजाति चराई भी परजीवी जीवन चक्र को तोड़ने में योगदान देती है। जबकि भेड़ और बकरियों में समान परजीवी होते हैं, मवेशियों और घोड़ों में नहीं। भेड़ और बकरियों के साथ चरने वाले मवेशी और घोड़े परजीवी जीवन चक्र को तोड़ने में मदद करते हैं क्योंकि भेड़ और बकरी के परजीवी उन अन्य प्रजातियों में जीवित नहीं रह सकते हैं। भेड़ और बकरियाँ मवेशियों या घोड़ों की तरह ही खेतों को चर सकती हैं ।

अंतिम विकल्प भेड़ और बकरियों की आनुवंशिकी पर विचार करना है। उत्पादकों को ऐसे रिकॉर्ड रखने चाहिए जिससे यह पता चले कि वे परजीवियों के लिए जानवरों का इलाज कब करते हैं। इस जानकारी में यह शामिल होना चाहिए कि किसका इलाज किया गया , इलाज की तारीख और इस्तेमाल किया गया उत्पाद। उत्पादकों को यह सुनिश्चित करने के लिए वापसी की तारीखों पर भी नज़र रखनी चाहिए कि जब भेड़ या बकरियाँ बाज़ार में जाएँ तो कोई दवा के अवशेष मौजूद न हों। उत्पादकों को उन जानवरों को मार देना चाहिए जिनके साथ वे झुंड या झुंडके अधिकांश जानवरों की तुलना में लगातार अधिक व्यवहार करते हैं। यह उत्पादकों को ऐसे आनुवंशिकी विकसित करने की अनुमति देता है जो परजीवी संक्रमणों के प्रति अधिक प्रतिरोधी होते हैं। परजीवी अभी भी मौजूद रहेंगे , लेकिन जानवर की प्रतिरक्षा प्रणाली संक्रमण को बेहतर ढंग से झेल सकती है

अच्छे चरागाह प्रबंधन के साथ-साथ अच्छे चयन प्रथाओं से भेड़ और बकरियों में परजीवी समस्याएँ कम हो सकती हैं।